भगवान श्री कल्कि

श्री कल्कि बाल वाटिका

श्री हनुमान जी

मासिक पत्रिका

मां वैष्णवी

गुरूदेव लक्ष्मीनारायण जी

SPECIAL

हमारा उद्देश्य संस्कार सत्संग कीर्तन

अंक 4, कुल पृष्ठ 12 मूल्य 10 रु वर्ष 2013

दिल्ली 13 अप्रैल 2013 | हरियाणा 14 अप्रैल 2013 | नैनीताल 29 अप्रैल 2013

माँ विंध्यावासिनी 12 मई 2013 | दशाश्वमेध घाट वाराणसी 13 मई 2013 | अन्न क्षेत्र कांशी 13 मई 2013

चमत्कारी श्री कल्कि की मूर्तियाँ पिछले जन्म के महाभाग्यवान राजा रानियो ने लगाई-लगाते रहेंगे अब अप्रैल-मई 2013 में 6 मूर्तियाँ लगा रहे हैं

श्री कल्कि बाल वाटिका संस्कार रोपण कार्यशालाएं

दिल्ली विश्वविद्यालय	21 अप्रैल
पटपड़गंज	21 अप्रैल
यमुना विहार	7 अप्रैल
पंजाबी बाग	21 अप्रैल
गगन विहार	14 अप्रैल
महावीर नगर	14 अप्रैल
मॉडल बस्ती	7 अप्रैल
नोएडा	14 अप्रैल

इस अंक में पढ़ें..........

जैसा करोगे कल्कि का काम वैसा मिलेगा कल्कि से दाम — 2

अपने ऊपर जुर्माना (पैनल्टी) क्यों लगाएं जब हम सब सही कर रहे हैं? — 6

खाने को तरीके से नहीं खाओगे तो औरों को भी भूल जाओगे — 9

बाल वाटिका ने खुले आकाश के नीचे साँस ली — 10

जैसा करोगे कल्कि का काम वैसा मिलेगा कल्कि से दाम

सुश्री इंदु बंसल 01132448401

''जब कल्कि से जोड़ना होता है तब तो कहते हैं- भाग्यशाली हो जो कल्कि जी का नाम मिला।''

''मना तेरी बन जाएगी बना ले कल्कि नाम से'' ''हमारे प्रभु कल्कि परम उदार''

पर

''जब व्यक्ति कल्कि कल्कि करने लगता है और उसकी थोड़ी सी परेशानी दूर होने लगती है, तो कितनी **वाह-वाही के गीत गाने लगते हैं कि देखो हमारे कल्कि भगवान ने तुम्हारा कितना भला कर दिया।''**

नया भक्त स्वीकार भी करता है कि हाँ, ''कल्कि जी की कृपा से मेरा यह हुआ तो है, **पर अब** यह दूसरी परेशानी के लिए जो प्रार्थना कर रहा हूँ, पर **यह काम तो नहीं हुआ।** इस पर अनुभव का अर्थ बताने वाले पैनल मैम्बरों का रुख ही बदल जाता है कि तुम कल्कि जी का क्या कर रहे होच, हमने तुमसे कमीशन तो लिया नहीं, जो तुम्हारे हर कष्ट दूर करवाना हमारी जिम्मेदारी है।''

नया भक्त : ''क्या कल्कि जी पहले प्रलोभन दिखाकर अपनाते हैं फिर ठुकराते हैं ?''

''नहीं भक्तगण नहीं। ऐसा कुछ भी नहीं है। बस हमारे बताने में और **आपके सुनने में कुछ बातों की कमी (Missing) हैं।''**

जब कोई नया भक्त कल्कि जी से जुड़ता है, तो उसे विभिन्न तरह के स्वप्नानुभव (Intutions)आने लगते हैं। दैवी जगत से रिश्ता जुड़ने की उसे अनुभूति होने लगती है और चमत्कारिक रूप से उसे अपनी परेशानियों से निकलने का रास्ता भी मिलने लगता है। बस व्यक्ति अपने आप में फूलने लगता है। कल्कि भगवान की थोड़ी बहुत माला, हवन या कीर्तन आदि करके इस बात से आश्वस्त (Take it for granted) हो जाना है कि उसका सब कुछ अच्छा ही होगा।

दूसरे शब्दों में कहें तो सरकारी कर्मचारी या सरकार का जवाईं अपने आपको समझाने लगता है कि एक बार सरकारी नौकरी मिल गई, फिर क्या फिक्र चाहे काम करें या न करें तनख्वा (salary) और सारी सुविधाएं (Allowances) मिलते ही रहेंगे। पर भाई यहीं हम धोखा खा जाते हैं।

है धर्म कसौटी काँटें में, होंगे इंसाफ सपाटे में
गाफिल मत रहना घाटे में, कल्कि जी कर में तोल रहे

भगवान कल्कि पूरे ब्रह्माण्ड की बहुत बड़ी करोड़ों-अरबों-खरबोंपति कम्पनी (Biggest Multinational Company) है। पूरे विश्व में उन्हें अपने राजशासन (Policies) और प्रभुता की धाक बैठानी है। आपकी किसी खास (Quality) (विशेष पुण्य) से

प्रभावित होकर युग के अवतार कल्कि जी ने आपको अपनी कम्पनी का सदस्य (employee) बनाया है। इतनी बड़ी कम्पनी में नियुक्ति पत्र (appointment letter) मिलते ही आपको बहुत सारी सहूलियतें (luxury) पहली बार (Package) में मिल जाती हैं। इस कम्पनी की सहूलियतों (allowances unlimited) की तो कोई सीमा ही नहीं है पर आलस्य, प्रमाद या कामचोरी के लिये कोई स्थान नहीं है।

मल्टीनेशनल कम्पनी की नीति के तहत आपको तुरन्त काम पूरा न होने की दशा में (you can be expelled immediately) ठुकरा भी दिया जाता है।

आवश्यक है, आपके प्रत्येक दिन का कार्य पूरा (update) रहे (माला, हवन, पूजा, स्वप्न अनुभवों को तुरन्त अथवा उसी दिन लिखना क्योंकि वह सिर्फ तुम्हारे लिये ही नहीं हैं, वह कल्कि समाज के और जरूरतमंद के लिये भी है। अनुभव गोष्ठी में पैनल मैम्बरों के पास बोल कर नहीं लिखकर देना, उसका अनुसरण (followup) करना अगर वह छपने लायक है तो छपे, सभी अनुभवों का सही संकल्प, उपचार, प्रार्थना करना। उपचारों को जितनी जल्दी हो देवताओं के पास भिजवाना)। इससे आपको तय सहूलियतें (salary) मिलती रहेंगी और आगे के रास्ते मिलते रहेंगे। लेकिन यदि तीव्र गति से बढ़ौतरी (Increment) चाहिए तो कम्पनी की प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए, हर शहर में कम्पनी का ऑफिस खोलने के लिए नए-नए तरीके (ideas) सोचने ही नहीं उन्हें कार्याम्वित करने पड़ेंगे। नए विचारों की कापी (Latest Project File) तैयार करनी पड़ेगी। नए कार्यों (Project) को पूरा करने के सही कदम (initiatives) लेने पड़ेंगे फिर देखिए आप कितनी जल्दी सदस्य/नौकर (Employee) से कम्पनी के अभिन्न अंग (शेयर होल्डर) बनते चले जाएंगे।

अर्थात

भगवान श्री कल्कि का जो भी कार्य आपके सामने आए उसे दूसरे पर मत डालिए। मेरे ख्याल में कहकर मत बोलिए बल्कि उसे

करना शुरु कीजिए। हज़ार मीटर चलना है तो कम से कम 100 मीटर तो चलो फिर स्वयं महसूस (feel) करोगे कोई तुम्हारा साथ दे रहा है और वही तो भगवान श्री कल्कि हैं। अपनी सामर्थ्य अनुसार उसे खुद ही पूरा करने की कोशिश कीजिए। अगर उस कार्य के लिये अन्य सदस्यों की आवश्यकता होगी तो स्वयं देखोगे भगवान श्री कल्कि अपने आप आपके साथ जोड़ते चले जावेंगे जहाँ कार्य की ग्लोरी के लिए ज्यादा हाथों की आवश्यकता होती है। उस समय अभिमान में न आवें। अपने कल्कि भक्त साथियों से उचित समन्वय बनाइये और कार्य को विशिष्टता से पूरा करें फिर देखें आप भी मेरे और मामाजी की तरह एक नहीं अनेक असम्भव कार्यों को सम्भव कर पाएंगे बर्शते फलदार वृक्ष की तरह झुकिये, मैं मैं करके तनिये नहीं।

विश्वास जानिए कल्कि जी इतना देंगे कि आपका आँगन छोटा पड़ेगा, पर प्रभु कल्कि जी का हाथ नहीं रुकेगा। स्वप्नानुभवों द्वारा जो संदेश/आदेश (मैसेज) मिलते हैं, उनको गंभीरता से लीजिए, उनके अनुरूप सावधानी बरतिये।

''कल्कि नाम की रटना से यह दुनिया नई बन जाएगी तू पलटा खाएगा और यह दुनिया पलटा खाएगी।''

त्रेता युग में रावण ने शिवजी की घोर तपस्या कर और अपने दस शीश चढ़ाकर जो लंका पाई, त्रेता युग के राम ने अपनी शरण आए विभीषण को अपने सन्मुख आते ही लंकाधिपति के रूप में उनका राजतिलक कर दिया।

द्वापर युग में युग के अवतार श्री क्रष्ण ने अनेकों लीला रचीं। बचपन का मित्र सुदामा दीन अवस्था में उनकी शरण आया, तो दो मुट्ठी चावल के बदले अनन्त सुख समृद्धि दे डाली।

दोस्तों, वही नारायण ही तो आज कल्कि रूप में अवतरित हुए हैं। क्या वे हमें दुखी रहने देंगे। यह कलियुग की विषैली हवा है, जो हमारा मन तोड़ती है। जब भी मन टूटे हर बार सौ रुपये का फाईन निकालिए, देखिए कितनी खुशियाँ आपका इंतजार कर रही हैं, जो मिलती रहेंगी।

कल्कि जी के एक सही वफ़ादार सैनिक बनिए फिर देखिए इतना पाओगे कि स्वप्न में भी नहीं सोच पाए होंगे जो प्रभु श्री कल्कि जी ने तुम्हें दे दिया होगा। **(BE A PERFECT PROFESSIONALIST TO ACHIEVE THE BEST FROM OUR KALKI JI BEYOND YOUR DESTINY)**

सुप्त तीर्थ जागरण अभियान में अब पिकनिक का आनंद भी संजोया

प्रिय साथियों, प्रति मास की भांति इस बार 20 अप्रैल 2013 शनिवार को शाम 3 बजे सुश्री इंदू बंसल की संरक्षिता में ब्रजघाट के लिए रवाना होंगे। ब्रजघाट पर लगभग 5:30 बजे दो कुंडीय यज्ञ (बगुलामुखी माँ, कल्कि सहस्त्रनाम के 108 विशेष नाम) करके श्री कल्कि विष्णु मंदिर संभल के लिए प्रतिमास की तरह प्रस्थान करेंगे। भगवान श्री कल्कि, पदमा जी एवं शंकर जी के दर्शन करने के बाद सब भक्त समुदाय प्रेम कुटीर के लिए रवाना होंगे। यहाँ अपने साथ लाए भोजन का सभी सामूहिक रूप से आनंद लेंगे। वृंदावन की तरह सत्संग, संकीर्तन एवं बातचीत के लिए सभी स्वतंत्र होंगे।

अगले दिन सुबह तैयार होकर कुरूक्षेत्र तीर्थ की ओर रवाना होंगे जहाँ कल्कि सहस्त्रनाम यज्ञ करने के पश्चात् प्रसाद ग्रहण करके दिल्ली के लिए रवाना होंगे।

विशेष— यदि यह सहस्त्रनाम यज्ञ (पिकनिक सहित) सफल रहा तो अगले 3-4 महीनों में ऐसा ही करेंगे।

नोट : विदेशों में 5 दिन की कड़ी मेहनत के बाद दो दिन शनिवार और इत्वार को विदेशी एंजॉय करते हैं ताकि दुबारा काम पर जाते समय उनमें नया उत्साह रहे। भगवान के कार्य के साथ पिकनिक का आनंद भी एक नया और अदभुत प्रयोग है जिससे बच्चों और बड़ों में सप्ताह के पाँच दिन पूजा करने का नियम तो बनेगा ही दो दिन ऐसे भी होंगे जबकि नए उत्साह के साथ भगवान कल्कि का कार्य भी होगा और आनंद भी।

वसंत नवरात्रों की आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं

भगवान श्री कल्कि का बीज मंत्र जय श्री कल्कि जय माता की

रामावतार से माँ वैष्णवी त्रिकूट पर्वत पर बैठीं भगवान श्री कल्कि की प्रतीक्षा में तप कर रही हैं। भगवान श्री कल्कि माँ वैष्णवी को अपनी संहारिणी शक्ति के रूप में अपनाकर पृथ्वी पर सत्युग की स्थापना करेंगे।

जब चित्रगुप्त ने मामाजी की शिकायत उनके मामाजी से की

स्वप्नानुभवः- मैं दुकान के जीने से सीधा चढ़कर ऊपर पहुँचा तो सामने चित्रगुप्त जी पेटी (बहीखाते के लिखने की टेबल) रखे बैठे हैं। बराबर में बैठे मेरे मामा की तरफ़ बायें हाथ करके बोले आज आए हैं साहब! फिर दायें तरफ़ नीचे की दुकान (ईको कार्नर) की ओर हाथ करके बोले दुकान की तो परवाह ही नहीं है।

अर्थः- लगभग 1987 में गौरी शंकर मन्दिर के शिव परिवार में मां पार्वती ने मुझे मार्किट में दुकान के लिये कुछ दिशा निर्देश दिये जैसे कि जो दुकान मिलेगी उसमें पूजा में भगवान के दोनो ओर 75-75 वाट के दो बल्ब लगाना आदि। 1989 में मुझे भागीरथ पैलेस में दुकान मिली। वह दुकान कल्कि जी ने ईको कार्नर के नाम से बेटे को खुलवा दी जब वह स्कूल में पढ़ता था। शुरु में तो मैं कुछ दिन दुकान गया लेकिन फिर आदमियों पर दुकान छोड़ दी। ऐसे में स्टाफ़ से जो सबके साथ होता है हमारे साथ भी वैसा ही हुआ। लगभग 1998 में मुझे स्वप्नानुभव हुआ कि दुकान मालिक चाहती है। बेटे से कहा लेकिन उसमें हिचकिचाहट थी सो उसके नहीं जाने पर मैंने खुद जाना शुरु किया। इसका शुभ परिणाम यह हुआ कि भारत में सबसे पहले वहाँ डी. जे. के काम की प्रभु कल्कि, मां दुर्गा ने शुरुआत कराई। परिणाम स्वरूप वहाँ की मार्किट ही डी. जी. के नाम से विख्यात हो गई। लेकिन वहाँ रहने से ऊपर वाले आलगामाइन ऑफिस की व्यवस्था डगमगा गई। उसे सम्भाला एवं उसके रहते भगवान श्री कल्कि के विभिन्न नए प्रोजेक्ट मेरे हाथ में आए जो मेरी वर्षों की चाहत थी। उससे मेरी 1964 की जड़ (ऑलगामाईन) एवं बरसो की चाहत भगवान श्री कल्कि के प्रचार के नए-नए कार्यों की व्यवस्था से अब दुकान (ईकोकार्नर) पर जाना बिलकुल बंद हो गया था।

अब फरवरी 2013 में एक स्वप्नानुभव में चित्रगुप्त जी ने मेरे मामाजी को संबोधित करते हुए मेरे लिये मानो व्यंगात्मक कह रहे हैं- आगए ना लाट साहब....

उस दिन से मैंने आलस्य को त्यागा, प्लानिंग से समस्त तीर्थ जागृत अभियान के तहत (सबसे पहले कल्कि भगवान के मंदिर जाएंगे।) ऐसे ही मैंने यह सुनिश्चित किया चाहे 1 घंटे के लिये जाऊँ दुकान (ईको कार्नर) पर जरूर जाऊँगा।

इसका सुपरिणाम यह निकला कि कस्टमर के रूप में भगवान

—भाव मामाजी-संयोजिका इंदु बंसल

बातूनी स्टाफ़ को यहाँ एकांत में बैठकर काम में लगाया बोलने को लिखित में बदलकर कार्यों को वास्तविकता का जामा पहनाया।

उपचारः- चित्रगुप्त जी 20 रुपये, दुर्गा जी 20 रुपये, कल्कि जी 20 रुपये

प्रार्थनाः-हे चित्रगुप्तजी मेरे दोनों हाथों से तलवार चलाने में कमी रही है, उसे माफ़ कर दो, आगे से ऐसा नहीं करूंगा।

निष्कर्षः- स्वप्नानुभवों के हिसाब से भगवान कल्कि के मन के अनुरूप काम करते हुए जो सफलताएं मिलीं और व्यापार को कम समय दिया गया यह भगवान को अच्छा नहीं लगा। श्री गुरु जी के हिसाब से कल्कि जी का काम करते हुए तलवार दोनों हाथों से चलानी पड़ेगी। अर्थात भगवान का कार्य भी करें और पैसा भी कमाएं। इसीलिए कल्कि भगवान ने अपने संसद सदस्य चित्रगुप्त को भेजा और मुझे यह संदेश भिजवाया कि जो दुकान तुम्हें दिलवाई है उसे भी सम्भालो ताकि चित्रगुप्त जी जब मेरा अकाऊंट बनाएं तो तराजू के दोनों पलड़े बराबर रहने चाहिए। राजा जनक की तरह राज पाठ भी चलाओ और भगवान का सुमिरन करते हुए कल्कि जी के प्राकट्य के प्रचार का कार्य भी करो।

कल्कि जी की चाहत

हिंदू नववर्ष की शुभकामनाएं

वर्ष प्रतिपदा, चैत्र शुक्ल, विक्रम संवत् 2070

11 अप्रैल 2013 को हिंदू नववर्ष एवं पहला नवरात्रा इस प्रकार मनाएं—

1. अपने घर, व्यापार के स्थान, पूजा स्थल को सजाएं
2. मित्रों, सगे संबंधियों को नववर्ष की शुभकामनाएं दें।
3. भजन संध्या का आयोजन अपने घर पर कर सकते हैं।
4. रोली तिलक लगाकर अपने मेहमानों का स्वागत करें।

हमारी संस्कृति हमारी पहचान

नैनीताल, मुक्तेश्वर में भगवान श्री कल्कि की मूर्ति स्थापना 28 अप्रैल 2013 को

27 अप्रैल 2013— रात 10 बजे शाह ऑडोटोरियम, सिविल लाइंस दिल्ली से नैनीताल के लिए बस द्वारा प्रस्थान
रात्रि 2 बजे अपनी हवेली रैस्टोरेंट में पहला विश्राम
28 अप्रैल 2013— प्रातः 6:30 बजे अर्श इंटरनेशनल रिजोर्ट भुवाली में ठहरने की व्यवस्था।
प्रातः 11 बजे विश्व प्रसिद्ध मंदिर करौली बाबा आश्रम के दर्शन करते हुए मुक्तेश्वर पहुंचेंगे।
शाम 5:30 बजे से 9:30 बजे तक भजन संकीर्तन व बाल वाटिका उत्सव। रात्रि भोज के पश्चात् बॉन फायर एवं अनुभव गोष्ठी का सामूहिक आनंद।
29 अप्रैल 2013— मूर्ति स्थापना महोत्सव के लिए प्रातः मुक्तेश्वर के लिए प्रस्थान करेंगे।
12 बजे से 1 बजे तक मूर्ति स्थापना, भंडारा, कीर्तन, महामंत्र जाप।
4 बजे से 5 बजे के बीच रिजोर्ट के लिए प्रस्थान।
29 अप्रैल 2013— रात्रि 10 बजे दिल्ली के लिए प्रस्थान 30 अप्रैल 2013 को सुबह 6 बजे दिल्ली आगमन

किराए का विवरण

बस से जाने के लिए— 3200 रु
अपने वाहन से—2200 रु

विशेष— 12 अप्रैल 2013 तक कृप्या बुकिंग करवा लें जिससे हमें आगे बस बुक करवाने की सहुलियत रहेगी। जो भक्त 29 अप्रैल की रात को रूक कर निकलना चाहते हैं उन्हें एक दिन का होटल का अतिरिक्त किराया देय होगा। कृप्या पहले संपर्क करके सूचित कर दें—
श्री मनोज पांडे-9212703815 सुश्री रश्मि गुप्ता- 9891355625

कल्कि कल्प-वृक्ष

मेरा काम बच्चों का हाथ नारायण श्री कल्कि के हाथ में देना है। मुझे उन्हें वास्को डिगामा की तरह कल्कि जी का सुदृढ़ सैनिक बनाना है। मुझे बच्चों के जीवन के शुरू के सिर्फ 6 वर्ष चाहिए। उसमें से भी सिर्फ प्रत्येक महीने के एक दिन के 6-7 घंटे, जिसमें उन्हें खेल-खेल में सनातन धर्म (कर्म प्रधान धर्म का ज्ञान, माता-पिता, बड़ों का सम्मान व भगवान की नवधा भक्ति) के संस्कार दिए जाते हैं। फिर बाकी के वर्षों की मुझे फिक्र नहीं।

मुझे बच्चों के ह्रदय की प्लेटों पर अच्छे संस्कार अंकित करने (लिखने) हैं ताकि उम्र के हिसाब से आने वाले वर्षों में कलियुग की भीषण आंधी से इस संघर्षमयी जीवन से टक्कर लेते हुए सुखी भाव से आगे ही आगे बढ़ते चले जाएं किसी भी कठिन परिस्थिति में टूटे नहीं। मुझे विवेकानंद की तरह ज्ञानी, झांसी की रानी, शिवाजी, राणा प्रताप व तांत्या टोपे आदि जैसे कल्कि जी के अर्जुन बनाने हैं साधु या संन्यासी नहीं। समाज के अभिन्न अंग बनाने हैं विद्रोही नहीं।

—मामाजी

सत्संगमयी अनुभव गोष्ठी

दिनांक : शनिवार 6 अप्रैल, शनिवार 4 मई 2013
स्थान : एम.के. हाउस, सी-2/8 अशोक विहार फेज-2
दीप सिनेमा के सामने, नई दिल्ली-52
समय : दोपहर 1 बजे से 5 बजे तक
संपर्क : श्री राकेश गोयल, सुश्री सुषमा गोयल (9899698240)
सुश्री इंदू बंसल

दिनांक : शनिवार 13 अप्रैल, शनिवार 11 मई 2013
स्थान : जी-3 थर्ड फ्लोर,मित्रद्वीप अपार्टमेंट* पटपड़गंज दिल्ली-92
समय : दोपहर 1 बजे से 5 बजे तक
संपर्क : श्री सुनील गर्ग, सुश्री संगीता गर्ग (9873349478)
सुश्री मेघना गोयल

आश्चर्यजनक किंतु सत्य.....महाविष्णु का भगवान श्री कल्कि ऐसा चमत्कारी अवतार जिसके प्रकट होने से पहले सिद्ध पीठों और शक्तिपीठों में मूर्तियाँ लग रही हैं और विधिवत पूजा हो रही है

अपने ऊपर जुर्माना (पैनल्टी) क्यों लगाएं जब हम सब सही कर रहे हैं?

सुश्री इंदु बंसल 01132448401

जैसे जंगली हाथी को महावत गहरा गड्ढा खोदकर, पकड़कर, कई दिन तक भूखा रखकर, अंकुश से काबू करता है, तब कहीं जाकर वह उसे राजा के बैठने के लिये राजमहल में लाता है।

शिल्पकार जब पत्थर पर गढ़ाई (छेनी चलाता है) तो पत्थर को दु:ख भले ही होता है लेकिन कालंतर में वह पत्थर देवता का स्वरूप धारण करने के बाद पूजा जाता है।

प्यारे बच्चों, इसी प्रकार किसान जब नुकीले हल से खेत को जोतता है तब धरती को बड़ी वेदना होती है लेकिन विभिन्न प्रकार के बीज बोने के बाद उसमें से नाना प्रकार के अनाज, फल हम सबको मिलते हैं।

इसी भांति निरन्तर तीव्र गति से दौड़ने वाले मन को विभिन्न प्रकार की पैनल्टियों से समयानुसार जुर्माने से काफी हद तक हम सफलता प्राप्त कर सकते हैं। इसने चमत्कारी प्रभु कल्कि के कार्यों को ही नहीं, मुझ नगण्य को ही नहीं, मुझ पर जिन साथियों ने विश्वास करके अपनाया सबको देखते ही देखते कहाँ से कहाँ पहुँचा दिया। यह हमारा प्रत्यक्ष अपनाया हुआ सफलता की उचाईंयों पर पहुँचने के लिये राम बाण है।

जुर्माने का सफर शुरु हुआ सन् 1960 में जब मेरे मन ने 2 घंटे की माला करते हुए रसोई में बनती हुई खीर को खाने की चाहत की मन कहने लगा यार कितने दिन बाद तो खीर बनी है। माला तो रोज़ ही करते हो। माला कहीं भागे ही थोड़े जा रही है। उठो खीर खा लो फिर माला कर लेना। उस पर मैंने श्री गुरुजी द्वारा प्रतिदिन मिल रहे सत्संग के आधार पर,''तुम कहीं बैठे भजन कर रहे हो अथवा भोजन कर रहे हो, तूफ़ान आया छत्त गिर गई शरीर टूट गया तो भजन का अथवा भोजन का किसका फल ज्यादा चित्रगुप्त जी तुम्हारे खाते में लिखेंगे''। जवाब **भजन का** । अत: ना तो मैं माला (भजन) के बीच से उठा और अपने मन पर उस दिन खीर न खाने का जुर्माना (पैनल्टी) लगाया। उसका नतीजा बतौर पैनल्टी मैंने उस दिन खीर नहीं खाई।

निष्कर्ष:- अगली बार खीर तो क्या रसोई भी कोई भी मिष्ठान बना चंचल मन ने एक बार भी खाने की जिज्ञासा नहीं जताई और न ही इधर -उधर भटका। दूसरा जुर्माना दुकान जाने से पहले यदि पूजा नहीं की तो नाश्ता नहीं किया तो अगले दिन से पूजा नहीं छूटी। तीसरा जुर्माना व्यापार के कार्यों में माला पूरी नहीं कर पाए तो शाम का खाना नहीं खाया। इस डंडनीय तरीकों से समय भी निकला और माला भी पूरी हुई। इसका प्रतिफल यह मिला कि लोक परलोक दोनों में ही चमत्कारी श्री कल्कि ने मुझे और सरला बहनजी को इस लोक में क्या दिया वह गूंगे के गुड़ के समान है। (दैवी शक्तियों परलोक)ने श्री कल्कि विष्णु मन्दिर 815, चौक कूण्डेवालान की यह समझते हुए स्थापना कराई मानो भविष्य में कूचा पातीराम कलियुग कीर्तन करने के गढ़ों को ध्वन्स कर देगा। धन्य है मां दुर्गा, मां गंगा, मां सरस्वती जिन्होंने मुझे श्री दिनेश कोतवाल स्वर्गीय श्री त्रिलोकी बाबू के सहयोग श्री सुरेन्द्र अग्रवाल सम्पादक श्री हरि कथा का सहारा मिला जिनकी कृपा का प्रतिफल है श्री कल्कि बाल वाटिका श्री कल्कि साहित्य * 45 रुपये तिमाही फीस मांग कर लाने वाले को 11 निर्यात पुरस्कार बल्लीमारन में रहने वाली बहन का चौमुखा विकास।

अब काम के बोझ (ग्रहस्थ, देश-विदेश के व्यापार, झंझटों, मुकदमों) ने शरीर के लिये भोजन की अनिवार्यता जताई। सो 1992 से शुरु हुआ रुपयों का फाईन 10-20-50-100-200-500 * रुपये प्रोजेक्ट की महत्ता के अनुरूप।

कनस्तर में आटा नहीं

सर्वदा ध्यान रहे पहले जीत कलियुग की होती है हमारी तो पिटने के बाद ही जीत होती है।

जिस तरह श्री तुलसीदास जी ने रामायण के हर पात्र को कीचड़ में उतार कर कमल की तरह से खिलाया ऐसे ही कलियुग ने देश विदेश में मुझे गिराया लेकिन वाह मेरे श्री कल्कि जिन्होंने कभी-कभी याद आने वाले इस पैनल्टी के तरीकों से मुझे कमल की तरह खिलाया। आज बनारस के प्रोजेक्ट के सफल होने के बाद वह स्थान जहाँ तुलसीदास जी ने रामायण लिखी थी उसी स्थान पर मेरे मुँह से विनय पत्रिका के यह बोल निकले, ''पर बस जान हसेहु इन इंद्रिय निज बस है न हंसयो'' जब तक मैं इंद्रियों का गुलाम था मेरे सब जानने वाले मुझ पर हँसते थे। लेकिन जब से मैंने जुर्माने से इंद्रियों को बस में किया मेरी जग हँसाई रुकी। मुझे गंगा मां, सरस्वती मां, दुर्गा जी ने रास्ता दिया। ''कुछ तो लोग कहेंगे लोगों का काम है कहना'' वह मुझे लोक परलोक दोनों में श्री गुरुजी, श्री हनुमान जी, श्री कल्कि जी

खीर लंच डिनर

की कृपा से सहारा दिये जा रही हैं।

प्रश्न: कल्कि जी की भक्ति, पूजा, हवन, माला, कीर्तन इन रास्तों को छोड़कर क्या फाईन के रुपयों में खुद को उलझा लें?

उत्तर: नहीं भक्तगण ऐसी बात बिल्कुल नहीं है। मुझे कल्कि भगवान से अनन्त मिला है और वही अनन्त पाने का तरीका मैं अपने सारे बच्चों और साथियों को समझाना चाहता हूँ।

आपने देखा होगा जब विद्यार्थी किसी विशेष परीक्षा की तैयारी करते हैं जैसे आई. आई. टी., आई. पी. एस., या मेडिकल आदि तो उन्हें दिन रात मेहनत करनी होती है। विद्यार्थी के थकने या चोट लगने पर टीचर उसके कोई बहाने नहीं मानते (सुनते)। उन्हें सिर्फ दिया गया काम पूरा चाहिए **क्योंकि :**

बनती है मूरत पत्थर से सैंकड़ों चोट खाने के बाद
रंग लाती है हिना पत्थर पर घिस जाने के बाद।

जब कोई भक्त कल्कि जी से जुड़ता है तब भगवान श्री कल्कि द्वारा उसके लिये विशेष टीचर नियुक्त किया जाता है। स्वप्न अनुभव विभिन्न तरह के आते हैं बहुत अच्छे भी और बहुत खराब भी। यदि भक्त बहुत ज्यादा सावधानी से हर स्वप्न अनुभव को गंभीरता से ले जो अच्छा दिखा है उसे प्राप्त करने की सारी प्रक्रिया सही से करता रहे (माला, हवन, पाठ, उपचार विवेकपूर्ण व्यवहार, सकारात्मक विचार) तो उसे सब कुछ मन चाहा मिला है और अवश्य मिलता रहेगा। कई कल्कि भक्तों द्वारा यह आजमाया हुआ हमारा यह प्रमाणित सत्य है।

हमारी विडम्बना

कल्कि भक्तों के साथ कलियुग की मायावी शक्तियाँ भी विद्यमान रहती हैं। वह भक्त के भावों और विचारों में किस तरह से प्रवेश कर उसे भ्रमित करती हैं कि भक्त को पता ही नहीं चलता। उदाहरण के तौर पर यदि भक्त अपनी माला हवन का नियमित कार्य कर रहा है तो अचानक ही उसके ऊपर दुनियादारी की इतनी व्यस्तता आ जाती है कि वह चाह कर भी समय नहीं निकाल पाता और उसकी गिरावट आरम्भ हो जाती है। ऐसे में यदि भक्त अपने ऊपर फाईन का संकल्प ले ले कि पूजा नहीं करने पर 50-100-200 रुपये (जितने से दु:ख हो) का फाईन निकालूंगा तो यह बिल्कुल सत्य है कि धीरे-धीरे ऐसे होगा कि चाहे जितनी भी व्यस्तता आए पूजा और माला के लिये समय अवश्य यह चंचल मन निकलवाता है।

चाहे हम रुपये के लिये कितने भी अनासक्त होने का नाटक करें पर कलियुग में हर व्यक्ति का मन चाहा प्रियतम रुपया ही है। डिप्रेशन को जीतने का सबसे बड़ा हथियार है जुर्माना (पैनल्टी) कलियुग की मायावी शक्तियाँ भक्त के अंदर बैठकर किस तरह से उसका मन तोड़ती हैं कि **भक्त मन से हार जाता है और दु:ख, बीमारी, हानि के चक्रव्यूह में फँस जाता है।** ऐसे में कलियुग बड़ी आसानी से भक्तों का पुण्य लूट ले जाता है क्योंकि पूरा ब्रह्माण्ड इस विज्ञान से संचालित होता है। ब्रह्मांड की एक विशेष शक्ति है। दुखी के पास दु:ख आकर्षित होगा जबकि किसी भी वस्तु को प्राप्त करने के लिये हम जितनी ज्यादा खुशी से उस वस्तु के लिये महसूस करेंगे वह उतनी जल्दी हमें खुशी अवश्य मिलेगी बशर्ते दुखी मन को पैनल्टी से खुशी की ओर ले जाएं।

डिप्रेशन में आने का अर्थ है अनजाने में कल्कि जी पर अविश्वास। डिप्रेशन आने पर फाईन निकालना शुरु कर दें और कल्कि जी की अनगिनत कृपाओं का आभार लिखना या पढ़ना या याद करना शुरु कर दें। देखिये कैसा चमत्कार होता है और कल्कि जी से असीमित खुशियाँ प्राप्त होती हैं।

सही अर्थों में अपनी अपने मन की शक्ति (विल पावर)को मजबूत (स्टराँग) करने का एवं अपने अंदर की छिपी शक्तियों को जगाने का सबसे सरल तरीका है जुर्माना (फाईन) अजमा कर देखिये।

* इसमें आधे रुपये गाय माता के भोजन (रोटी, कुट्टी आदि) और आधे रुपये भगवान श्री कल्कि जी के साहित्य में लगाएं।

नोट: यह रुपये शुभ के डिब्बे से नहीं लिये जाएंगे यह आपकी

A VERY HAPPY HOLI
TO OUR ALL KALKI BAL VATIKA MEMBERS
I would like to inform to all of you that a Press Confrence for our Event "KALKI" is to be held during the first week of April 2013 at
SHIPRA HOTEL BANQUET
NEAR FILM CITY NOIDA

where DVD of Event "KALKI" will be launched and shown to mostly all the representatives of religious channels under direct supervision of Shri Vipul Gupta and other members of advertising committee.

ONE MORE GOOD NEWS
KALKI BAL VATIKA CHANDNI CHOWK
starting again from 31st march 2013 which will be held at quaterly
schedule for the meeting to be held on 31st march 2013 at 1903, first floor, chandni chowk, Delhi-6

10 a.m to 12 p.m............HAVAN
12 p.m to 1.30 p.m............MAHAMNTR JAAP
1.30 p.m to 2 p.m..............Bhandara
2 p.m to 5 p.m
PREMIER OF "KALKI" PLAY
exclusively for all the members of Shri Kalki Bal Vatika

5 p.m to 6 p.m............BHAJAN SUDHA and AARTI

JAI SHRI KALKI ***Yogesh Gupta***

चमत्कारी श्री कल्कि जी की मूर्तियां पिछले जन्मों के महाभाग्यवान राजा रानियों ने लगाई-लगाते रहेंगे-लगा रहे हैं

विंध्याचल में भगवान श्री कल्कि की मूर्ति स्थापना 12 मई 2013 को
माँ विंध्यवासिनी मंदिर परिसर, विंध्य महादेव के पास, विंध्याचल, मिर्जापुर
वाराणसी में भगवान श्री कल्कि की मूर्ति स्थापना 13 मई 2013 को
दशाश्वमेध घाट, बड़ी सीतला माँ मंदिर, कांशी धाम, वाराणसी में आप सभी सादर आमंत्रित हैं
श्री श्री खिचड़ी बाबा मंदिर, अन्न क्षेत्र, कांशी धाम, दशाश्वमेध, वाराणसी (बृहस्पति मंदिर के सामने)
10 मई 2013- शाम 5:45 नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से शिव गंगा एक्सप्रेस द्वारा वाराणसी के लिये प्रस्थान
11 मई 2013- प्रातः 8:30 बजे वाराणसी में जैपुरिया धर्मशाला, बागला अतिथि भवन व मारवाड़ी धर्मशाला में आपकी सुविधा अनुसार आपके ठहरने की व्यवस्था उपलब्ध
प्रातः 10 बजे गंगा जी के तट पर शीतला माता के मन्दिर में कल्कि भगवान की मूर्ति पूजा आरम्भ
दोपहर 2 बजे रात्रि 8 बजे तक नगर भ्रमण व विभिन्न सिद्धपीठों के दर्शन
12 मई 2013- प्रातः 7 बजे वाराणसी से विंध्याचल के लिये प्रस्थान-माँ विंध्यवासिनी दर्शन
प्रातः 10 बजे से दोपहर 1 बजे तक विंध्याचल में कल्कि भगवान की मूर्ति स्थापना
दोपहर 1 बजे से दोपहर 2 बजे तक भगवान श्री कल्कि का भण्डारा
शाम 5 बजे विंध्याचल से वाराणसी के लिये प्रस्थान
रात्रि 9 बजे से 11 बजे तक अनुभवमय सतसंग गोष्ठी
13 मई 2013-प्रातः 7 बजे गंगा जी पर कल्कि जी का हवन व मूर्ति पूजा
प्रातः 8:30 बजे भगवान श्री कल्कि की शोभायात्रा
प्रातः 10 से 12 बजे भगवान श्री कल्कि की मूर्ति स्थापना, श्रृंगार, कीर्तन एवं आरती
दोपहर 12:30 बजे से 1:30 बजे तक भगवान श्री कल्कि का भण्डारा
दोपहर 1:30 बजे से 5 बजे तक नगर भ्रमण व सिद्धपीठ दर्शन
शाम 6 बजे वाराणसी रेलवे स्टेशन पर पहुँचकर शिव गंगा एक्सप्रेस के द्वारा दिल्ली के लिये प्रस्थान
इच्छुक भक्तगण रेलवे होटल व गाड़ी की बुकिंग के लिये सम्पर्क करें
श्री मनोज पाण्डेय- 09212703815, श्री सुनील सिंघल श्री अमित जैन- 09310133445

टैक्सी- इनोवा ए .सी. 10 रुपये प्रति कि. मी. (कम से कम 200 कि. मी. प्रति दिन), टैक्सी इंडिगो ए . सी. 8 रुपये प्रति कि. मी. (कम से कम 200 कि. मी. प्रति दिन), टैक्सी इंडिका ए .सी. 7 रुपये प्रति कि. मी. (कम से कम 200 कि. मी. प्रति दिन),
पहले से बुकिंग तथा अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें—
श्री मनोज पांडे-9212703815 श्री सुनील सिंघल-9810227111 श्री अमित जैन-9310133445
विशेष : इस बार चाट का आनंद लें दीना चाट भंडार गोधूलिया चौक, वाराणसी

24 मार्च 2013 को वाराणसी में होलिका मंदिर में पूजा करते हुए मामाजी

हिरण्याकश्यप की बहन होलिका को अग्निदेव ने वरदान में एक दुशाला दिया था जिसे ओढ़ कर वह अग्नि में नहीं जल सकती थीच। हिरण्याकश्यप ने अपनी बहन की गोद में अपने पुत्र प्रहलाद को बैठा कर अग्नि को समर्पित कर दिया। भगवान विष्णु का चमत्कार कि पवन के वेग से दुशाला तो उड़ गया और होलिका जल कर भस्म हो गई और विष्णु भक्त प्रहलाद का बाल भी बांका नहीं हुआ।

खाने को तरीके से नहीं खाओगे तो औरों को भी भूल जाओगे

अनुभव मामाजी संयोजिका-सुश्री इंदु बंसल 011-32448401

स्वप्न अनुभव की किताब जिसके लिये मामाजी 3 साल से कार्यरत्त थे पूरे होने में नहीं आ रही थी। जब भी मामाजी पुरजोर कोशिश करते वह असफल रहे। एक सदस्या को तो यहाँ तक भी अनुभव आया कि यह पुस्तक नहीं बनेगी। नवम्बर 2012 में श्री कल्कि बाल वाटिका के बालक बालिकाएं 5-6 जनवरी 2013 के कार्यक्रम के काम में लगे हुए थे। उसी दौरान मेघना गोयल ने समय का फायदा उठाते हुए अध्यक्ष महोदय से स्वप्न अनुभव विज्ञान पुस्तक के विमोचन की बात 5 जनवरी 2013 के लिये की। मेघना गोयल से 5 जनवरी को स्वप्न अनुभव पुस्तक के विमोचन की बात सुनकर **मेरे मस्तिष्क में भीषण तनाव आ गया कि जो चीज़ भगवान ही पूरी नहीं करना चाह रहे उसमें यह लोग मुझे क्यों फँसा रहे हैं ?** लेकिन विभिन्न शरीर एक आत्मा के अनुरूप मैंने कल्कि जी, सरस्वती मां, गंगा महारानी के उपचार व प्रार्थना की कि जो भी आसुरी शक्ति इस पुस्तक को नहीं छपने देना चाहती उनको उनका भाग देकर कल्कि समाज के लिये इसका प्रकाशन करवा दीजिए।

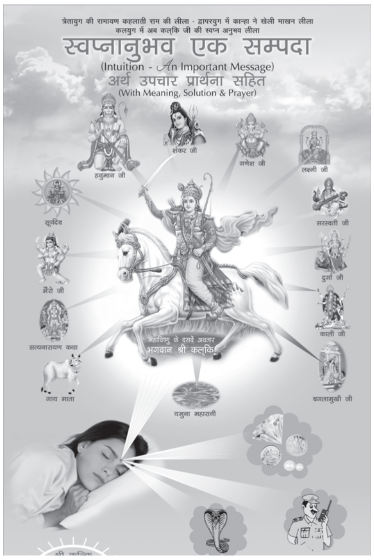

10 दिसम्बर के नज़दीक इस पुस्तक को ऐसी चाल मिली कि एक स्वप्न अनुभव के हिसाब से मैंने नोयडा जाने का मन बनाया और वहाँ बैठकर इसको श्री ओम प्रकाश शर्मा एवं श्री सोमवीर सिंह से समय-समय पर सलाह करता रहा। इसके लिये मुझे 9 बार सुबह से लेकर देर शाम तक दिल्ली से नोयडा जाना पड़ा। मैंने दोनो समय का भोजन इन 9 दिनों में गाड़ी में ही खाया। 5 जनवरी 2013 को स्वप्नानुभव ग्रंथ का विमोचन हुआ जिसकी 1100 प्रतियाँ कल्कि समाज में वितरित की गईं।)

स्वप्नानुभवः- **आश्चर्यजनक किंतु सत्य** मुझे स्वप्न अनुभव में दिखा कि 4-5 विशिष्ट व्यक्ति आए हैं। मैं उनसे कह रहा हूँ मैंने आपको देखा तो है पहचान नहीं पा रहा। इस पर पीछे से मुझे वाणी संदेश मिलता है कि पहचानोगे कैसे, खाना तरीके से नहीं खाओगे तो औरों को भी भूल जाओगे ?

अर्थः- इस स्वप्न अनुभव के बाद ऐसा लगा कि जैसे कि मेरी शुरु से ही भोजन के लिये कोई अनुशासनात्मक प्रक्रिया नहीं रही है। इसलिये प्रभु श्री कल्कि मुझे एक बालक की तरह अपना काम लेने के साथ-साथ प्यार से डाँट भी रहे हैं कि खाना तरीके से खाओ...

काम-काम-काम भगवान का, दुकान का, व्यापार का कहीं का भी हो दिमाग कहीं न रहकर उसी में रहता है, पानी और खाने पर तभी ध्यान जाता है जब शरीर बार-बार मांगता है। और वो भी जब जैसे मिल जाता है उससे तुरन्त संतुष्ट हो जाता है। स्वप्न अनुभव के बाद से अब काम के स्थान से उठकर अलग जगह बैठकर खाने की प्रक्रिया शुरु की है।

उपचारः- 20 रुपये कल्कि भगवान 20 रुपये अन्नपूर्णा महारानी

प्रार्थनाः- हे कल्कि भगवान मुझे क्षमा करें मैं आगे से ऐसा नहीं करूंगा। समय पर अलग बैठकर भोजन करूंगा। हे अन्नपूर्णा महारानी मेरा अच्छा भोजन खत्म न करें अब मैं अलग से बैठकर मोबाइल पर बात न करते हुए इज्जत से पूर्ण रूपेण भोजन करूंगा।।

जिन्हें हम हार समझे थे गला अपना सजाने को
वो काले नाग बन बैठे हमें ही काट खाने को

पाश्चात्य सभ्यता ने किस प्रकार हमारी संस्कृति का दोहन करके अपनी कूटनीति से हमारे संस्कारों को नष्ट तो किया लेकिन फंसने पर अपने हृदय से हमारी अरबों वर्ष पूर्व पुरानी संस्कृति और ज्ञान का अनुमोदन किया जिसका खुलासा 21 मार्च 2013 के नवभारत टाइम्स में किया गया कि नासा ने कहा कि —

अब भगवान बचाएंगे एस्टरोयड से

हाँलीवुड की फिल्मों में आपने जरूर देखा होगा कि जब कोई ऐस्टरॉयड पृथ्वी की तरफ बढ़ता है तो नासा के साइंटिस्ट उसे बीच में ही तबाह कर देते हैं लेकिन असल जिंदगी में ऐसा नहीं है। नासा ने किसी ऐस्टरॉयड के पृथ्वी के टकराने की घटना रोकने के लिए एक खास उपाय बताया है बस भगवान से प्रार्थना कीजिए वही आपको बचा सकते हैं। नासा ने यह बात अमेरिकी कांग्रेस में कही।

श्री कल्कि लीला महोत्सव

-श्रीमती रीता गुप्त धर्मपत्नि डॉ० वेद प्रकाश गुप्त

5-6 जनवरी 2013 को आयोजित कल्कि लीला महोत्सव का तो जवाब ही नहीं था। मैंने कभी नहीं सोचा था कि भगवान श्री कल्कि के पूजन का इतना अच्छा उपहार मुझे मिलेगा। काफी सवाल काफी समय से मेरे मन में थे जिन्हें मैं पूछने से हिचकिचाती थी। उन सभी सवालों को जवाब मुझे इस कार्यक्रम में मिले। जैसे मैं नहीं समझ पा रही थी कि 'कलि' क्या है? वह मुझे अब बहुत अच्छे से समझ में आ गया है। अब मैंने यह बात बिलकुल सही पाई कि कल्कि भगवान अनुभवों के द्वारा हमें रास्ता देते हैं।

एक छोटी सी बात- मैं अपने बच्चों की परेशानियों से बहुत परेशान रहती थी। मन में आने वाले कल का डर समाया रहता था। लेकिन जब से मेरे बच्चों ने कल्कि भगवान की पूजा-अर्चना, उपचार आदि किये तो उसका नतीजा यह हुआ कि जो बच्चे सहमे हुए थे वो अब शान से समाज के साथ मिलजुल कर कल्कि जी का कार्य करने में लगे हुए हैं। मैंने तो अपने मन को इधर-उधर भटकने से ही रोक लिया।

महोत्सव इतना मनमोहक था कि वहाँ से हटने का मन ही नहीं था। भाई साहब जी (मामाजी) आपने जो परिवार में यह कल्कि जी की लौ लगाई है वह मशाल बनकर इस संसार का भार उतारेगी।

माटी के खिलौने को कल्कि के साथ जोड़कर लोक परलोक का आनन्द लो

मानव शरीर एक माटी का खिलौना है जिसमें जीवरूपी आत्मा निवास करती है उसी से यह संचालित होता है। जिस प्रकार आप एक खिलौना बाज़ार से लाते हैं, खेलते हैं, टूटने पर फेंक देते हैं। उसी प्रकार इस मानव जीवन से बेहतरीन से बेहतरीन काम भक्त ध्रुव की तरह ले लो जिसने बाल्यकाल में ही भगवान के दर्शन किये, भगवान का कहना मानकर राज पाठ चलाया, ग्रहस्थ आश्रम के बाद इस प्रकार भगवान की आराधना की कि जब शरीर छोड़ा तो यमराज की कमर पर पैर रखकर विमान में बैठकर ब्रह्मलोक को गए। आज भी वही ध्रुव, ध्रुव तारे के नाम से ब्रह्माण्ड में एक विशेष पहचान बनाए हुए है।

प्यारे साथियों, आप भी आज भक्त ध्रुव, भक्त प्रह्लाद और मीरा की तरह एक ऐसा विशिष्ट कार्य कर रहे हैं कि भगवान कल्कि के प्रकट होने पर समस्त ब्रह्माण्ड आपको इंगित करके कहेगा कि इन्हीं लोगों ने कलियुग कटवा दिया।

बाल वाटिका ने खुले आकाश के नीचे साँस ली

-मामाजी

मामाजी की चाहत में कुमार विष्णु ने रंग भरा

लगभग 2009 में जब कुमार विष्णु छठी कक्षा में था तो मामाजी ने मेघना गोयल से कहा कि आप अपने बेटे विष्णु को कम्प्यूटर में अपने साथ काम करने दो। जैसी भी सहूलियतें यह चाहे सिर्फ मुझे बता देना, एक दिन यह मेरे अन्य कम्प्यूटर वाले बच्चों की तरह बेहतरीन काम करके दिखाएगा।

आप सभी को सर्व विदित है कि पिछले दो साल से हमारे साहित्य पैनल की सदस्या मासिक पत्रिका के लिये किस तरह परेशान थीं। मामाजी की विशिष्ट, ऊँची चाहत, ऊँची उड़ान, हाथ में इन्स्टालमेन्टस की रेखा के कारण (कल्कि जी के हर काम को हाँ करना) ने उनका कम्प्यूटर वाले के यहाँ जाने पर बैन तो लगा दिया पर धीरे-धीरे मामाजी कम्प्यूटर वालों की वास्तविक परेशानी से भी **अवगत हुए** कि वह श्री कल्कि बाल वाटिका प्रति मास कम्प्यूटर पर क्यों नहीं तैयार कर सकते?

इसके लिये मामाजी ने गंगा मां, मां सरस्वती व भगवान श्री कल्कि की मदद से 4-5 जगह कम्प्यूटर के नए सैक्टर खोले।

कम्प्यूटर के काम में विष्णु ने तो मेरी ऐसी मदद की कि 'दे पांडे आशीष मैं क्या दूंगा मेरी आत्मा देगी।' उसने पिछले 6 महीनों में हमारी मासिक पत्रिका का प्रारूप ही बदल दिया। अब हमारी पत्रिका का पी डी एफ प्रिंटर के यहाँ छपने से आधा घंटा पहले जाने से पहले भी अगर दैवी शक्तियों कुछ बदलवाना चाहती हैं तो वह प्रतिक्रिया बिना किसी मानसिक तनाव से सम्भव हो गई है। अब तो मुँह से यही निकलता है- **पराधीन स्वप्नेहू सुख नाही**

आज श्री कल्कि बाल वाटिका अपने कम्प्यूटर पैनल की छत्र छाया में खुले आकाश में साँस ले रही है।

एक रंगारंग ज्ञानवर्धक और मार्गदर्शक शाम

5 तारीख का कार्यक्रम मैं पूरा नहीं देख पाया। डौक्यूमैन्टरी में तब और अब ने वास्तव में आँखें खोल दीं। आधुनिक पीढ़ी को प्राचीन भारतीय संस्कृति की जानकारी की बहुत आवश्यकता है। 6 तारीख का कार्यक्रम तो बहुत ही अद्भुत रहा। उसकी प्रशंसा करने के लिये तो शब्द भी थोड़े हैं।

इन पच्चीस वर्षों में छोटे-छोटे बच्चों का कार्यक्रम में भाग लेना, भजन गाना, लीला करना इत्यादि यह श्री कल्कि बाल वाटिका के संस्कार नहीं तो और क्या हैं! जो सनातन समाज को मिल रहे हैं।

कल्कि लीला बहुत ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुत की गई। मन मयूर नाच उठा। व्यवस्था अति उत्तम थी। सारे कल्कि भक्त जिम्मेदारी, लगन और स्नेह से कार्य कर रहे थे। सभी साधुवाद के अधिकारी हैं। **दो शब्द योगेश भाई व माामाजी के लिये कहना चाहूंगा-** **लगे रहो कल्कि के प्यारों सतयुग की तैयारी में**
धूम मचा दो कल्कि के आने की दुनिया सारी में

—डॉ. वेद प्रकाश

भविष्य-दर्शन अन्तर्जगत में स्वप्नानुभव एक सम्पदा के दूसरे संस्करण का नामकरण

प्यारे बच्चों और साथियों कितने भाग्यशाली हो कि श्री हनुमान जी-ठाकुर स्वामी रामकृष्ण परमहंस-श्री कल्कि जी आपको लोक परलोक से समय समय पर अवगत करवाते रहते हैं। 5 जनवरी 2013 को **स्वप्नानुभव एक सम्पदा** ग्रंथ का विमोचन हुआ।

सुश्री मेघना गोयल (9136377829) को 8 जनवरी को एक स्वप्नानुभव में भगवान ने बताया कि स्वप्नानुभव एक सम्पदा स्वप्न-अर्थ-उपचार-प्रार्थना सहित वाली दूसरे ग्रंथ का नाम **भविष्य दर्शन** होगा। पूर्ण विवरण जनवरी 2013 के मासिक पत्रिका के अंक में पढ़ सकते हैं। प्रस्तुत हैं **भविष्य दर्शन** में आने वाले कुछ स्वप्नानुभव जिन पर मामाजी, सुश्री सुषमा गोयल व अन्य पैनल सदस्य कार्यरत हैं—

*** दुकान का ताला खुलकर बंद * गुलाब का फूल * नजर की तीन बत्तियाँ * 100 में से एक की जमानत * 21 वर्षीय लड़के की शादी मर्द के साथ * तू नहीं और सही तो मैं क्यों नहीं * मरकर भी भाषण * तुझे ही नहीं-तेरे दोस्त-रिश्तेदार को भी बचाऊंगा * मैट्रो ने पीपल की जड़ें काटी * माँ ने कहा इसे दुकान की चाबी मत देना * स्वर्गीय पिता ने स्वर्गीय माँ द्वारा रूका रुपया दिलवाया * एक नहीं दोनों अमानतें जाएंगी * मामाजी की कितनी मौतें * धनाढय परिवार में कल्कि का काम करने वालों को न बचा पाए * बड़ों के आगे थोड़े शब्द बोलकर निकल जाओ * दीपक जलाकर अंतर्जगत का मैसेज वापिस * क्षणिक अनुभव— * लेबर यूनियन * झूला झूलते हुए हाई कोर्ट में अपील स्वीकार * कल्कि जी की शक्ति का बल पूरे विश्व में फैले * पूरा विश्व जागेगा जागेगा * अणु परमाणु बन चुके हैं।**

नोट—जो भी कल्कि भक्त अपने स्वप्नानुभव जो उनके साथ घटित हुए हैं हमें लिख कर भेजें। इनके छपने पर कल्कि समाज को मदद और दृष्टा को सुख वैभवता मिलती है ऐसा हमने पाया है। वह बात अलग है ***मानूं मैं न मानूं***

चमत्कारी श्री कल्कि जी की विंध्याचल एवं वाराणसी में प्राण प्रतिष्ठा

विंध्याचल में भगवान श्री कल्कि की प्राण प्रतिष्ठा एवं काशी वाराणसी में गंगा घाट बड़ी सीतला मां मंदिर में 13 मई 2013 को होगी। प्रस्तुत है जाने वाले 107 भक्तों की सूची (शिव गंगा ट्रेन से 10 मई शाम 6:55 पर नई दिल्ली से चलकर वाराणसी से 13 मई रात्रि 7:15 पर चलकर 14 मई प्रातः 7:40 पर नई दिल्ली पहुंचेंगे) योगेश गुप्ता, साक्षी गुप्ता, शुभम गुप्ता, उर्वि गुप्ता, राकेश गुप्ता, मीनाक्षी गुप्ता, तनिष्क गुप्ता, सार्थक गुप्ता, दीपक गुप्ता, नलिनी गुप्ता, शुभ गुप्ता, श्रेय गुप्ता, सुभाष गुप्ता, रचना गुप्ता, सतीश गुप्ता, अरूणा गुप्ता, डा. वेद प्रकाश गुप्ता, रीता गुप्ता, सुधा गुप्ता, पीयूष गुप्ता, विपुल गुप्ता, प्रिया गुप्ता, प्रियंका गुप्ता, उदिता गुप्ता, अर्चित गुप्ता, ज्योति गुप्ता, कन्नव गुप्ता, रिया गुप्ता, रिशांक गुप्ता, काशवी गुप्ता, अजय गुप्ता, हिमांश गुप्ता, शील कुमारी गुप्ता, नमिता अग्रवाल, आनंद अग्रवाल, सुषमा अग्रवाल, सौरभ अग्रवाल, ऊषा गोयल, राजेश गुप्ता, पूजा गुप्ता, अमित जैन, निधि जैन, हेमंत अग्रवाल, रिधिमा अग्रवाल, अमोघ अग्रवाल, मेघा गोयल, मुकेश गोयल, संगीता अग्रवाल, लावण्या अग्रवाल, महिमा गुप्ता, अनिरूद्ध गुप्ता, अंकुर गोयल, शलभ गोयल, रिधि गोयल, राहुल अग्रवाल, मोना अग्रवाल, बिन्नी गोयल, राजेंद्र गुप्ता, रीता गुप्ता, दीपक गुप्ता, नेहा गुप्ता, काशवी गुप्ता, जय गुप्ता, राम प्रकाश अग्रवाल, विमला अग्रवाल, अजय अग्रवाल, नितिश कुमार, हर्ष कुमार, ओमांश, आरती अग्रवाल, संजू अग्रवाल, भावना अग्रवाल, इंदू बंसल, मनु बंसल, पूर्णिमा अग्रवाल, संगीता गर्ग, दीपक कुच्छल, आशा कुच्छल, राजुल गुप्ता, रश्मि गुप्ता, शुभम गुप्ता, सताक्षी गुप्ता, बाला गुप्ता, अलका गोयल, राकेश गुप्ता, सुषमा गुप्ता, आशा कंवर, ललित कंवर, सुनील सिंघल, इंदू सिंघल, प्रवीन कुकरेजा, बिंदु कुकरेजा, मानसी कुकरेजा, वैभव बंसल, संजय बंसल, दिनेश गर्ग, सुनीता गर्ग, हिंशिका गर्ग, नीति गुप्ता, संजय गुप्ता, मामाजी

कोलकाता तथा रानीगंज से हवाई जहाज द्वारा आने वाले भक्तों की सूची— राजन चौधरी-सविता चौधरी, महावीर चौधरी- निर्मला चौधरी, मयंक चौधरी, श्रुति सर्राफ- अमित सर्राफ, वरूण चौधरी, प्रतिभा अग्रवाल, भक्ति राम भलोटिया, मनोज भलोटिया

भगवान श्री कल्कि की मूर्ति स्थापना

तिथि : 13 अप्रैल 2013
शोभा यात्रा : प्रातः 10 बजे
मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा : दोपहर 12 बजे
स्थान : शुक्ला वाला मंदिर, सब्जी मंडी घंटाघर, दिल्ली-7

आभार : सुश्री रमा-संजू गड़ौदिया
9312539397

भगवान श्री कल्कि की मूर्ति स्थापना

तिथि : 14 अप्रैल 2013
शोभा यात्रा : प्रातः 10 बजे
मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा : दोपहर 12 बजे
स्थान : श्री कृष्ण शरणम धाम मंदिर पारले जी बिस्कुट फैक्ट्री के सामने बहादुरगढ़, हरियाणा

आभार : श्री सुभाष शर्मा (महरौली)
9971879583

श्री कल्कि संकीर्तन महोत्सव

तिथि : 21 अप्रैल 2013
समय : दोपहर 2 बजे से 7 बजे
स्थान : भजनपुरा गली नं. 9 नियर भजनपुरा थाना दिल्ली
अधिक जानकारी के लिए :

सुश्री राखी दीक्षित-9911109937
सुश्री शालिनी पांडे- 9212703815

Registered with the Registrar of Newspaper for India Under No. Delhi-N/2005/15596 Postal D. No. DL(DG)-11/8061/2012-2014

मई अंक में पढ़ें..................

अपने देश की माटी के अनेक रंग
–सुश्री इंदू बंसल

जीवन का रहस्य
–डॉ. वेद प्रकाश

भगवान श्री कल्कि का साहित्य

क्योंकि कल्कि भगवान को प्रकट होने के लिये प्रचार की आवश्यकता है। बन पड़े तो मंदिरों में रूपये चढ़ाने की वजाय कल्कि जी का साहित्य एक रूपया या पाँच रूपये का सिक्का रखकर चढ़ाएं इससे आपके दोनो होथों में लड्डू रहेंगे अर्थात आम के आम गुठलियों के दाम।

न करने का न करवाने का झंझट बस फोन करते रहें जब तक काम पूरा न हो

मंदिरों में भगवान श्री कल्कि जी की मूर्ति, पोशाक, लाईट प्रभारी : हर्षित गुप्ता, अंकित गड़ौदिया, अक्षय गड़ौदिया–9999885277

शक्तियों का खेल समझो गोवा भारत का नहीं इंग्लैंड का होता...

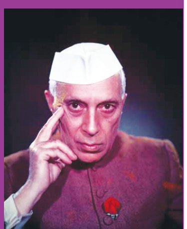

दूल्हा तो घोड़ी चढ़ता ही है चाहे रिश्तेदार कम आएं

श्री कल्कि बाल वाटिका

* दिल्ली विश्वविद्यालय * पटपड़गंज * यमुना विहार * पंजाबी बाग * गगन विहार * महावीर नगर * मॉडल बस्ती * नोएढा * इंदिरापुरम

1903/3, पहली मंजिल, चाँदनी चौक, दिल्ली–110006 सम्पर्क : 23886646, 23866661

आभार/Ack. : श्री कल्कि पुराण, ऋग वेद, ऋषि प्रसाद, स्वामी राम सुखदास, नवभारत टाइम्स
योगेश प्रकाश गुप्ता, दिल्ली द्वारा प्रकाशित व अन्य बालकों के ज्ञानवर्धन हेतु

श्री कल्कि बाल वाटिका मासिक पत्रिका

के सदस्य बनने हेतु सम्पर्क करें—

☎ 9312533445, 9136377829 9968314876